12.35 hrs.

RE: FAST BY SHRI M. N. GOVINDAN NAIR, M.P. FOR JUDICIAL INQUIRY INTO INCIDENTS IN AGRA—*contd.*

MR. SPEAKER: I understand that the hon. Minister of Parliamentary Affairs wants to make a very important announcement regarding Shri Govindan Nair. I hope he has the permission of the House to make that statement now.

SEVERAL HON. MEMBERS: Yes.

THE MINISTER OF PARLIAMENTARY AFFAIRS AND LABOUR (SHRI RAVINDRA VARMA): I am glad to inform the House that the Chief Minister of UP has announced that a judicial inquiry will be conducted into the incidents at Agra. A retired High Court Judge will be appointed to preside over the enquiry under the Commissions of Inquiry Act.

SHRI VAYALAR RAVI: Sir, may I make a submission. Let the Minister of Parliamentary Affairs meet Shri Govindan Nair and convey to him and request him to give up his fast.

SHRI VASANT SATHE: I want to move that whole House resolves to request Shri Govindan Nair to give up his fast.

MR. SPEAKER: Let me, on behalf of the House and every section of the House, appeal to Shri Govindan Nair to give up his fast. I would make this appeal.

SHRI A. BALA PAJANOR (Pondicherry): Instead of the Minister of Parliamentary Affairs making this announcement, it should have been done by the Prime Minister.

12.37 hrs.

CALLING ATTENTION TO MATTER OF URGENT PUBLIC IMPORTANCE—*contd.*

FLOODS IN U.P., ASSAM AND BIHAR—*contd.*

SHRI YADVENDRA DUTT: Sir, will you allow me two supplementaries. Last time you allowed two supplementaries.

MR. SPEAKER: Then you should not have any supplementary today.

SHRI YADVENDRA DUTT: I would ask the hon. Minister of Agriculture to understand one thing very clearly, namely, that floods have become an annual feature of this country. What we get year by year is a statement that they are doing this relief, that relief. The relief by itself has become a vested interest in corruption. I can give you one example of Balia. For the last so many years efforts have been made for stopping the floods in Ganga but with no success. Will he kindly compare the expenditure that the Government have incurred during the last 30 years on these floods with the proposed expenditure for the implementation of the Dastur Plan for linking up all the rivers in India, thereby saving this country from perpetual annual floods and droughts? Will he assure this House that this scheme will be taken up so that this country is saved perpetually from floods and droughts. Giving ordinary relief of a few hundreds of rupees for a house, or a few hundred rupees for one crop or cattle is no relief, because everything is given as taccavi loan. May I ask the hon. Minister of Irrigation whether he is prepared to have any permanent scheme for giving relief to agriculturists like crop and cattle insurance against floods, fire and hail. I have put two clear questions to him, and I hope he will be good enough to assure the House on these two points so that perpetually our people do not

[Shri Yadvendra Dutt]

suffer annual destruction due to floods.

SHRI SURJIT SINGH BARNALA: Floods are a perpetual menace. They come in one place in one year and in another place another year. It will be in one State in one year and in another State another year. So, a permanent remedy could not be found. All the same, efforts are being made and so far about Rs. 533 crores have been spent. The hon. Member was saying that a lot of money has been spent. Actually, a lot of money has been spent on this for constructing embankments. The total length of embankments so far constructed is about 10,000 km. Similarly, drainage facilities in about 17,000 km. have been provided. Towns have been protected, villages have been taken to higher grounds. So, that way about Rs. 533 crores have been spent.

The question was connected with the Dastoor plan and it was asked whether it would be possible to execute the plan. The Dastoor plan has come to us also, we have examined it in the Ministry. I have personally gone into it. It is a very ambitious plan I would say, and involved inter-State problems, international problems, and different types of problems. A study alone of the Dastoor plan will require some years. So, this problem cannot be tackled by the Dastoor plan. We are making all out efforts to prepare master plans for all the river basins for all the States, so that a comprehensive flood control measure can be adopted.

SHRI YADVENDRA DUTT: He has not answered the demand for cattle and crop insurance for the agriculturists against flood, fire and hail.

SHRI SURJIT SINGH BARNALA: For the time being this is not possible.

श्री राम विलास पासवान (हाजीपुर): अध्यक्ष महोदय, 17 जुलाई को मेरे अनस्टार्ड क्वेस्चन संख्या 158 के उत्तर में प्रतिवर्ष बाढ़ से होने वाली क्षति के आंकड़े दिये गये हैं। उस में बताया गया है कि बाढ़ के कारण 1975 में 471.27 करोड़ रुपये, 1976 में 888.75 करोड़ रुपये और 1977 में 1131.57 करोड़ रुपये की क्षति हुई और जहां तक पापुलेशन एफेक्टिड का प्रश्न है, 1975 में 313.50 लाख, 1976 में 505.20 लाख और 1977 में 445.80 लाख लोग प्रभावित हुए। जहां तक बिहार का सम्बन्ध है, वहां 1975 में 265.76 करोड़ रुपये और 1976 में 205.99 करोड़ पये की क्षति हुई। सैंट्रल वाटर कमीशन की रिपोर्ट के मुताबिक अभी तक—1976 तक—बाढ़ से कुल 2834 करोड़ रुपये की क्षति बाढ़ के कारण हुई है। इस का मतलब यह है कि प्रतिवर्ष 146 करोड़ रुपये की क्षति होती है। सरकार द्वारा राहत कार्यों पर जो रुपया खर्च किया गया है, अगर उसको भी मिलाया जाय, तो मैं समझता हूं कि एक योजना चल गई होती।

बिहार में जहां मेरा घर पड़ता है—शहरबन्नी, वह कोसी के बीच में है। उस के 15 मील उत्तर, 15 मील दक्षिण, 15 मील पूर्व और 15 मील पश्चिम तक कोई रास्ता नहीं है। वहां बड़ी बड़ी नदियां हैं: कोसी, गंगा, गंडक, बागमती। मंत्री महोदय ने बताया है कि कितने एकड़ जमीन वहां पर बाढ़ से प्रभावित होती है। 1975 में वहां 113 लाख पापुलेशन एफेक्टिड हुई थी। अध्यक्ष महोदय, मैं आप का ध्यान उस तरफ खींचना चाहता हूं, क्योंकि आप को उस

तरफ का अनुभव नहीं है । उत्तर बिहार में क्या होता है ? वहां की जनसंख्या, वहां का भूभाग इतना ग्रस्त होता है बाढ़ से और मंत्री महोदय ने एक बात कही कि एक साल में यहां बाढ़ आती है, दूसरे साल में दूसरे प्रदेश में, बाढ़ आती है, ऐसी बात नहीं है । कुछ ऐसे प्रदेश है जैसे उत्तर प्रदेश है, बिहार है, आसाम है, हरयाना है ये सब ऐसे प्रदेश हैं जहां प्रत्येक वर्ष बाढ़ आती है और बाढ़ को रोकने के लिए आप कारगर कदम भी उठाते हैं लेकिन मैं आपको जानकारी देना चाहता हूं कि जहां से मैं आता हूं, खगरिया है, नारायनपुर है वहां के बारे में तमाम पेपर में आप पढ़ते होंगे कि वहां दरिया से कटाव रोकने के लिए करोड़ों रुपया खर्च किया गया है । लेकिन अभी आप के सामने नेशनल संकट है, जो नेशनल हाई वेज है सिर्फ 20 गज बचा है कटने के लिए नारायनपुर मनसी के निकट । रेलवे लाइन कटने वाली है और आप का नेशनल हाईवे कटने वाला है । मैं यह कहता हूं कि आप जो खर्चा कर रहे हैं उस का उपयोग इंजीनियर सही रूप में नहीं कर रहे हैं । आप बोल्डर के नाम पर तमाम रुपया देते हैं और वह तमाम बोल्डर गंगा के पेट में चले जाते हैं, और इंजीनियरों के पेट में चले जाते हैं । वैशाली जिले का हाजीपुर क्षेत्र जहां से मैं जीतकर आता हूं वहां राघवपुर, महनार, जनदाहा यह पूरा का पूरा प्रखंड कट गया है और आप हमें आंकड़े बताते हैं कि इतने करोड़ रुपया खर्च हुआ है ।

मैं कहना चाहता हूं, इस के दो तरीके हैं । एक तो यह कि जो बड़ी बड़ी नदियां हैं उन को आप एक नहर के माध्यम से जोड़ दीजिए और उन को समुद्र से मिला दीजिए । क्या सरकार यह काम करने जा रही है ? दूसरे, यह जो हिमालय है उस के बगल से आप नहर निकाल सकते हैं जिस में हिमालय का पानी दूसरे भागों में न जाय और उसी नहर से हो कर समुद्र में मिल जाय । आप चाहे समूची योजना को खत्म कर के एक राष्ट्रव्यापी योजना तैयार कीजिए जिस में हर साल लोगों को इतना नुकसान न हो । मंत्री महोदय अपने उत्तर में यह भी बता दें कि कितने लोगों की मृत्यु अभी तक हुई है बाढ़ के कारण और क्या सरकार कोई राष्ट्रीय ग्रिड की योजना और उत्तर भारत में पश्चिम से पूर्व तक हिमालय के समानान्तर नहर खोदने की योजना पर विचार करेगी ?

श्री सुरजीत सिंह बरनाला : हां, यह बात ठीक है कि इन के इलाके में बहुत फ्लड रहता है । मुझे इन्होंने खुद भी बताया था कि बहुत इलाका ऐसा है, 15-16 मील एक तरफ और इतना ही दूसरी तरफ, जहां आने जाने का कोई रास्ता नहीं रहता है । तो वहां जो नदी आती है वह ऐसी है कि जिस में कोई बांध नहीं लगाया जा सकता । ऊपर बांध लगता है नैपाल के इलाके में लेकिन वह कोई आसान तरीका नहीं है । यह जो पैसा खर्च किया जाता है बांध बनाने के लिए या कहीं दरिया पर स्पर बनाने के लिए यह भी बहुत जरूरी है । बांध बना कर बहुत से गांवों को बचाया जाता है और ऐसे बहुत से गांव बचाये जा चुके हैं । जिन को हर साल बड़ा नुकसान होता था उन को अब कम नुकसान होता है । इसलिए यह जो स्पर बनाते हैं उन से कई जगह तो काम अच्छा हो जाता है और कई जगह स्पर बह भी जाते हैं । जैसे आप कह रहे थे कि अभी कि इंजीनियरों के पेट में चले जाते हैं । पत्थर ऐसा भी कहीं होता होगा लेकिन स्पर दरिया के पानी में बह भी जाते हैं । पिछले साल मैं खुद गया था आसाम के डिब्रूगढ़ के इलाके में, वहां मैंने देखा दरिया काट रहा था जमीन को, वहां पर कुछ स्पर बनाये जा रहे थे । 8 स्पर कुल बनाए गए । उस में

[श्री सुरजीत सिंह बरनाला]

तीन बह गए। अभी पांच बाकी हैं। अभी पता नहीं इस मौसम में उनका क्या हाल होगा। तो यह तो चलता रहता है। जो आप ने बताया कि आया सब दरियाओं को एक नहर के साथ जोड़ कर समुद्र से जोड़ दिया जाय, ऐसा कोई प्रोपोजल हमारे पास नहीं है और न ही कोई ऐसा विचार है कि सब दरियाओं को पहले नहर से जोड़ कर फिर समुद्र से मिला दें। यह तो हमारे विचार में हैं कि पानी को बांध लगा लगा कर इकट्ठा कर लिया जाय और उससे इर्रीगेशन फैसिलिटी दी जाय। इस तरह से फ्लड भी कंट्रोल हो जाता है और इर्रीगेशन भी मिलता है, बिजली भी पैदा होती है। ऐसे प्रोपोजल हमारे पास हैं।

श्री राम विलास पासवान : मेरा जवाब कहां पूरा हुआ? कितने आदमियों की मृत्यु हुई हैं फ्लड के कारण और हिमालय के समानान्तर कोई नहर खोदने की क्या कोई योजना है?

श्री सुरजीत सिंह बरनाला : 30 साल में कितने आदमियों की मृत्यु हुई है ये फैक्टस तो मैं अभी नहीं दे सकता। यह सूचना मेरे पास इस वक्त नहीं है।

श्री लक्ष्मी नारायण नायक (खजुराहो) : अध्यक्ष महोदय, माननीय सिंचाई मंत्री ने अपना वक्तव्य दिया है। उस में अभी पासवान साहब ने भी पूछा था, उन्होंने बताया कि कितने क्षेत्र में फसलों का नुकसान हुआ, कितने जानवरों का अनुकसान हुआ उसके कुछ आंकड़े दिए हैं, लेकिन लोगों के जीवन की हानि के बारे में आपने बताया कि पता नहीं है। मैं समझता हूं मंत्री जी को पहली मुख्य बात तो यह जाननी चाहिए कि कितने आदमियों की मृत्यु हुई। दूसरी बात यह है कि हर साल बाढ़ से जो फसलों का नुकसान होता है उसके लिए कोई क्रमबद्ध योजना जरूर बनानी चाहिए। अभी कुछ थोड़ा सा बताया गया लेकिन मैं समझता हूं इसकी घोषणा होनी चाहिए कि इस साल अमुक योजना बना कर इतने लोगों को राहत पहुंचाई जायेगी। देहात में गरीब आदमी मिट्टी के कच्चे घर बनाते हैं वह भी कई वर्षों तक चलते हैं फिर सरकार की ओर से जो सीमेन्ट के तटबंध बनाये जाते हैं उनमें कई दरारें पड़ जायें या वह टूट जायें इसका क्या कारण है? क्या उनकी देख-रेख नहीं होती है? यह भी कहा गया कि आदमियों ने भी तटबंध तोड़ दिए हैं। मैं जानना चाहता हूं क्या उनकी देख-रेख नहीं की जाती? दूसरी बात यह है कि जब आदमियों की रक्षा के लिए ही उनका निर्माण किया गया है तो फिर वे स्वयं उसको क्यों तोड़ेंगे? मैं समझता हूं अधिकारियों ने यह गलत आरोप लगाया है।

मैं मंत्री जी से जानना चाहता हूं कि अभी जो जन, धन, फसलों और मकानों का नुकसान हुआ है उसकी पूर्ति के लिए सरकार तत्काल क्या करने जा रही है? केन्द्रीय सरकार तथा प्रान्तीय सरकारों ने कौन से आदेश दिए हैं जिनसे लोगों को तत्काल राहत मिल सके।

इस के साथ ही मैं एक बात और कहना चाहता हूं, कि जितने पुराने तालाब और बांध हैं वह काली मिट्टी से भर चुके हैं जिसके कारण उनमें जो पानी आता है वह तुरन्त निकल जाता है। इसलिए मैं चाहता हूं कि पुराने तालाबों की मिट्टी निकाल कर उनको गहरा किया जाये ताकि उनमें पानी रुक सके। मैं चाहूंगा मंत्री जी मेरी इन बातों का जवाब दें।

श्री सुरजीत सिंह बरनाला : जो सवाल यह पूछा गया कि फ्लड्स के कारण आज तक कितना नुकसान हो गया और कितने आदमी मर गए यह आंकड़े देना मेरे बस की बात नहीं थी लेकिन इस मौसम की जो बात पूछी गई है .....

श्री रामधारी शास्त्री (पदरौना) : मंत्री जी कहते हैं कि मेरे बस की बात नहीं है तो फिर यह आंकड़े कौन देगा ?

MR. SPEAKER: There is a question about loss of life due to floods.

SHRI SURJIT SINGH BARNALA: The question was about loss of life up to date by floods. From which time?

MR. SPEAKER: This year.

SHRI SURJIT SINGH BARNALA: For this year, I have mentioned. I have got the figures for this year. I cannot say for the last 30 years.

For this year, I have received the news from U.P.

आज सुबह 8 बजे मैं डाटा इकट्ठा कर रहा था तो यू० पी० से लेटेस्ट पोजीशन यह मिली कि वहां जिन गांवो पर फ्लड का असर हुआ उनकी तादाद 801 है। जो पापुलेशन अफेक्टड है उसकी तादाद है 1,02,624। जिस एरिया पर असर हुआ उसका रकबा है 1,79,000 एकड़ और क्राप एरिया जो अफेक्टेड है वह है 1,20,000 एकड़। जो लोग मरे हैं उनकी तादाद है 41, इसी तरह से कैटल हेड्स लास्ट 35। आज सुबह 8 बजे यह इत्तला मिली थी।

बिहार के बारे में जो कुछ इत्तला मिली थी, वह मैं बता चुका हूं।

श्री उग्रसेन : (देवरिया) : माननीय अध्यक्ष महोदय, आपके जरिए पहली बात मैं माननीय मंत्री जी को बताना चाहता हूं कि जो उनकी रपट है वह बिल्कुल अपूर्ण है। उत्तर प्रदेश, मैं एक हजार गांव बाढ़ से प्रभावित हुए हैं और दस लाख की आबादी प्रभावित हुई है। अभी तक 98 आदमियों के मरने की सरकारी रपट है और गैर-सरकारी रपट के अनुसार 100 आदमी मरे हैं।

अध्यक्ष महोदय, मैं बिल्कुल हेडिंग्ज ही बताता हूं, बहुत कम समय में मैं माननीय मंत्री जी से सवाल कर लूंगा, आप बीच में छेड़ियेगा नहीं।

मधुबनी बांध में दरार से उत्तर प्रदेश के पूर्वी इलाके में गम्भीर संकट। बिहार का पलासी, मधुबनी बांध टूट गया है और बिहार की सरकार को हमारे मुख्य मंत्री श्री राम नरेश यादव जी ने लिखा है कि तुरन्त इस बांध की मरम्मत की जाये। आगे है :

Army helps to rescue flood-hit Basti.

बस्ती में फौज बुला ली गई है, बहराइच में फौज बुला ली गई है। राप्ती का पानी डोमरियागंज और बहराइच के शहर भिनगा में घुस गया है।

Two tehsils of Deora inundated.

हाटा में जो रामधारी शास्त्री जी का क्षेत्र है वहां शहर में पानी घुस गया है और फौज बुला ली गई है।

इसी तरह से असम की सारी नदियों में बाढ़ है।

Major rivers in north Bihar in spate.

बागमती, बड़ी गण्डक, छोटी गण्डक, सभी में बाढ़ है। मंत्री जी ने बहुत हलके तरीके से इसको लिया है। मैं पूछना चाहता हूं कि बाढ़ कैसे रुकेगी जब सरकार के पास बाढ़ का कोई इतिहास ही नहीं है। तीस वर्षों में चह्वाण साहब की कांग्रेसी सरकार ने यह काम भी नहीं किया कि फ्लड की हिस्ट्री बना ली जाये। किसी बाढ़ में राहत काम करना या उसको समाप्त करने के लिए तकनीकी योजनायें लागू करना असम्भव है, जब तक कि उस का इतिहास हमारे सामने न हो। चाइना के बारे में मैंने पढ़ा है—वहां भी यह समस्या बहुत ज्यादा थी, उन्होंने सब से पहले अपना

[श्री उग्रसेन]

फ्लड इतिहास तैयार किया और उस को देख कर फ्लड स्कीम्ज बनाई गई और लागू की गई और आज उन की नदियां स्वर्ग की नदियां बन गई हैं, खुशहाली की नदियां बन गई हैं।

इसलिए मैं आप से कहना चाहता हूं कि सब से पहले आप बाढ़ का इतिहास लिख वाइये। हम उत्तर प्रदेश और बिहार के लोग हिमालय से तबाह हैं। "मेरे नगपति, मेरे विशाल"—कविवर रामधारी सिंह दिनकर हिमालय के लिए गाते थे, लेकिन हम लोग तबाह हैं और इसलिए तबाह हैं कि हिमालय अपना पूरा पानी शारदा के जरिये, घाघरा के जरिये, राप्ती के जरिये बूढ़ी गण्डक के जरिये हमारे ऊपर डाल देता है। मैं जानना चाहता हूं—शारदा की पंचेश्वर योजना, राप्ती की पहले जलकुण्डी योजना और बाद में भालू बांध योजना, घाघरा की करनाली योजना, जिस के लिए पिछले 15 सालों से काम हो रहा है और जिस के लिए नेपाल सरकार से सहमति भी प्राप्त हो गई है—कब तक पूरी हो पायेंगी ? नेपाल की तमाम नदियां आज उत्तर प्रदेश और बिहार में जाती हैं—साढ़े सात लाख एकड़ क्षेत्र में हर वर्ष बाढ़ आती हैं। मैं चाहता हूं कि इस पर एक दिन की लम्बी बहस होनी चाहिए, इस काल एटेंशन से काम नहीं चलेगा, मैं नियम 184 के अन्तर्गत बहस का नोटिस अभी से आप को दे रहा हूं। आप कहते हैं 6 हजार करोड़ रुपया बाढ़ पर खर्च हुआ है, लेकिन काम कुछ भी नहीं हुआ है। जब नेपाल की नदियों को ठीक करने के लिए नेपाल सरकार ने आप को आदेश दे दिया . . .

अध्यक्ष महोदय : उग्रसेन जी, प्रश्न पूछिये।

श्री उग्रसेन : अध्यक्ष जी, आप मेरी बातें सुन लीजिए, अंग्रेजी बोलने वाले माननीय सदस्य अपनी बात कहने के लिए अंग्रेजी में बहुत जल्दी-जल्दी बोलते हैं, इसी लिए मैं भी अपनी बात कहने के लिए हिन्दी में बहुत जल्दी जल्दी बोल रहा हूं, रिपोर्टर्ज लोग मुझे माफ़ करें।

जब नेपाल सरकार ने हमारे प्रधान मंत्री जी और विदेश मंत्री जी के साथ संयुक्त वक्तव्य लिख कर दे दिया कि हम पंचेश्वर योजना चाहते हैं, हमारे यहां बना लीजिए भालू बांध बना लीजिए, जब नेपाल सरकार की अनुमति मिल गई है तो फिर उस पर काम क्यों नहीं हो रहा है ? आप हमें अपनी कठिनाई बतलाइये।

राहत काम में हमारे यहां क्या होता है ? एक मुट्ठी चना दे दिया जाता है, एक दियासलाई दे दी जाती है, उसके बाद एक-आध कपड़ा दे दिया जाता है, उस के बाद राहत-काम खत्म। कांग्रेसी शासन का अब तक का यही तरीका रहा है—मर्ज बढ़ता गया, ज्यों-ज्यों दवा की। मैं सरकार से जानना चाहता हूं—इन नदी योजनाओं परियोजनाओं की जानकारी के लिए और राहत कामों को ठीक करने के लिए हर वर्ष कांग्रेसी राज्य में एक टीम वहां जाया करती थी . . .

MR. SPEAKER: Mr. Ugrasen, you are an experienced legislator. It is a Calling Attention.

श्री उग्रसेन : अध्यक्ष जी, आप मुझे रोकिये नहीं, या तो आप मेरी बात सुन लीजिए या ये कागज पत्र आप को देकर मैं हाउस से बाहर चला जाऊंगा। आज हमारी क्षेत्र बाढ़ से पीड़ित है, पानी से डूब रहा है, यदि आप मुझे नहीं बोलने देंगे, तो बैठ जाऊंगा मैं ही इस सदन में एक ऐसा सदस्य हूं जो आप की बात को हमेशा मानता हूं . . .

अध्यक्ष महोदय : आप क्वेश्चन्स पूछिए ।

श्री उग्र सेन : मैं मंत्री जी से यही पूछ रहा था कि कांग्रेस के रिजीम में राहत कामों की स्टडी के लिए हमेशा एक टीम जाया करती थी । क्या मंत्री जी बतलाने की कृपा करेंगे कि उस टीम को कब तक भेज रहे हैं, ताकि वह टीम वहां जा कर नुकसान का अन्दाजा लगा सके और अपनी रिपोर्ट केन्द्रीय सरकार को दे सके । यदि माननीय मंत्री जी मेरे इस सुझाव को स्वीकार करें तो क्या वे इस सदन के माननीय सदस्यों को भी उस के साथ जोड़ने की कृपा करेंगे ।

एक निवेदन यह करना चाहता हूं कि गंगा वाटर कमीशन का दफ्तर इस समय पटना और कलकत्ता में है, जब कि इस कमीशन का सम्बन्ध केवल गंगा से ही नहीं है, बल्कि उस की ट्रिब्यूटरीज के साथ भी है । इसलिये मैं चाहता हूं कि इस का कार्यालय लखनऊ में भी खोला जाय और उस के द्वारा इस काम को पूरा कराने की चेष्टा की जाय ।

मैं यह भी जानना चाहता हूं कि आज गंगा और ब्रह्मपुत्र दोनों नदियां हिमालय की मिट्टी से भर गई हैं । जिस तरह से आप ने हुगली में ड्रेजर लगा कर उस को साफ़ करने का प्रयास किया है, क्या उसी तरह से आप इन दोनों नदियों को भी ड्रेजर लगा कर साफ़ करायेंगे ।

मैं अपने सवालों को फिर से दोहराना चाहता हूं—नेपाल सरकार के साथ जिन योजनाओं पर सहमति हुई है, उन को कब तक चालू किया जायेगा, गंगा कमीशन का दफ्तर कब तक लखनऊ में खुलेगा और गंगा और ब्रह्मपुत्र नदियों को ड्रेजर लगा कर कब तक साफ़ किया जायगा ।

13 hrs.

श्री सुरजीत सिंह बरनाला : माननीय सदस्य ने चार सवाल किये हैं । पहला सवाल तो यह किया गया कि नेपाल के साथ जो बांध बनाने की बात है, उसके बारे में हम क्या कर रहे हैं । उस के बारे में हमने उस से बातचीत की है, करनाली के लिए पंचेश्वर और राप्ती के लिए भालू बांध बनाने के बारे में बातचीत हुई है । हमारे प्राइम मिनिस्टर साहब वहां पर गये और फारेन मिनिस्टर साहब भी वहां गये और उन्होंने वहां पर बातचीत की । मैं यह बता दूं कि यह सारा काम ऐसा आसान नहीं है कि एकदम उन्होंने कह दिया और दरिया पर बांध बन गया और उस का पानी रुक गया । It is not that easy. अलग-अलग जो प्रोजेक्ट्स हैं, उन के बारे में मैं आपको बता रहा हूं । पहली बात तो यह है कि दूसरे देश से जो बातचीत की जाती है, वह बड़ी सोच-समझ कर की जाती है और उस की मर्जी के हिसाब से ही कुछ किया जाता है क्योंकि हम जबर्दस्ती इस मामले में नहीं कर सकते हैं । The first step is that it has already been agreed to constitute a Committee to examine te preliminary issues with regard to execution of the Karnali Project. यह कमेटी का फ़ैसला हो गया । हिन्दुस्तान ने अपने रेप्रेजेंटेटिव्ज नामीनेट कर दिये हैं और उनके रेप्रेजेण्टेटिव्ज नामीनेट होने वाले हैं । जब यह कमेटी बन जाएगी, तो कार्यवाही शुरू हो जाएगी ।

पंचेश्वर के लिए हाइड्रो-इलैक्ट्रिक प्रोजेक्ट है । उसके बारे में दोनों तरफ से फ़ैसला हो गया है कि अपने-अपने नुमायन्दे चुनकर तीन महीने के अन्दर एक ज्वाइन्ट इन्वेस्टीगेशन टीम की शक्ल में एक टीम बने ताकि इस के बारे में ज्वाइण्ट इन्वेस्टीगेशन हो सके । यह भी फ़ैसला हुआ था कि दोनों देश, जो भी कोई स्टडी हो या इन्वेस्टीगेशन हो, उसके लिए ज्यादा से ज्यादा फैसिलिटीज उस टीम को मुहैया करेंगे । राप्ती का जहां

तक सवाल है, राप्ती में जो पहले जलकुण्डी योजना बनी थी, उस जलकुण्डी योजना को नेपाल ने एक्सेप्ट नहीं किया, मंजूर नहीं किया क्योंकि उस से उन का बहुत सा इलाका पानी में डूब जाता। इसलिए उस योजना को उन्होंने स्वीकार नहीं किया था। अब फ़ैसला यह हुआ है कि राप्ती पर भालू बांध बनाया जाए और उस के लिए दोनों साइड्स के एक्सपर्ट्स की मीटिंग एक महीने के अन्दर बुलाने का फ़ैसला किया गया था। पहली मीटिंग हो चुकी है और डिटेल्ड प्रोजेक्ट एस्टीमेट्स इन्हें दो साल के अन्दर बना कर, तैयार कर के देने हैं। इन प्रोजेक्ट्स पर जो काम हो रहा है, उस के बारे में मैंने जिक्र किया है। इस में दिक्कत यह है...

MR. SPEAKER: Will you take more time.

SHRI SURJIT SINGH BARNALA: Yes, I will take some more time.

MR. SPEAKER: Then we will continue after Lunch. We will meet at 2 o'clock.

13.03 hrs.

The Lok Sabha adjourned for Lunch till Fourteen of the clock.

The Lok Sabha re-assembeld after Lunch at three minutes past Fourteen of the clock.

MR. SPEAKER: Before I call the Minister of Agriculture, I would call upon the Prime Minister to make his statement.

STATEMENT RE. PRIME MINISTERS' VISIT TO BELGIUM, U.K. AND U.S.A.

THE PRIME MINISTER (SHRI MORARJI DESAI): With your permission, Sir, I would like to make a short statement on my visit abroad from June 5 to 17 But it is not so short, if I may say so.

During a short technical halt in Tehran, I met His Imperial Majesty the Shanshah of Iran at his invitation. At the invitation of the Prime Ministers of Belgium, the United Kingdom and the President of the United States, I visited their respective countries. I also addressed the Special Session of the U.N. General Assembly on Disarmament. The Minister of External Affairs, Shri A B. Vajpayee, joined me in London and thereafter assisted me.

IRAN

2. At Tehran I had a useful exchange of views with His Imperial Majesty the Shahanshah of Iran and briefly reviewed the regional situation in the light of developments since his visit to India in February last. The exchange helped to harmonise our understanding and reinforce our interest in the political stability of and economic cooperation amongst the nations of our region. I am happy to say that we reached a broad measure of understanding on these issues.

BELGIUM

3. My visit to Beligum was the first at the political level since 1972. We have no political problems with Belgium, but the exchange of views with the Belgian Prime Minister was useful and ranged over the problems of Europe, Asia and Africa. In particular, we covered recent events in Zaire and agreed that the problem of security of the area should be left to the Africans themselves under the overall guidance of O.A.U. I was also received by His Majesty the King of Belgians.

4. In Brussels I had also meaningful talks with the President of the European Commission, Mr. Roy Jenkins, and Mr. W. Haferkamp, Vice-President in charge of External Af-